सीपी के मोती

श्री सनातन मित्र मण्डल निःस्वार्थ

सीपी के मोती

जब ईश्वर आत्मा होकर बुद्धि का नियंत्रण नहीं लेते, मनुष्य की बौद्धिक स्वतंत्रता को पूर्ण सम्मान देते हैं तो तुम भी अपनी बौद्धिक स्वतंत्रता को कहीं गिरवीं मत रक्खो; साथ ही किसी की बौद्धिक स्वतंत्रता को प्रतिबन्धित मत करो। तुम अपने विचार लोगों के समक्ष रक्खो और उन्हें स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अवसर दो।

❈ ❈ ❈

जीव की भाषा न तो हिन्दी है न रूसी और न ही अंग्रेजी है, जीव की भाषा है-लीला। **लीला शब्द का अर्थ है सत्य का नाटकीय प्रस्तुतीकरण।**

❈ ❈ ❈

जब तुम बोरी भर राख से एक दाना गेहूं न बना सके; थाली भर खाने से एक बूंद रक्त भी न बना सके तो तुमने पेट किसका भरा? लड़का पैदा किया? पेट भरने का और पिता बनने का एक नाटक ही तो किया था? यूनिवर्सिटी के सारे पोथे और डिग्रियां बटोरकर भी जब तुम भौंह का एक रोम न बना सके तो तुम विद्वान कहां थे? विद्वता का नाटक ही तो किया था? इसलिये ईश्वर भी जब तुमको पढ़ाने आते हैं तो तुमको तुम्हारी ही भाषा में अर्थात् लीला में पढ़ाते हैं।

❈ ❈ ❈

मंदिर क्या है?

लीला के माध्यम से तुमको तुम्हारा ही स्वरूप पढ़ाया गया है। जब तुम ध्यान में पल्थी लगाकर बैठते हो; पल्थी के ही जैसा चबूतरा, धड़ के जैसा ही चबूतरे पर गोल कमरा, सिर के जैसा मन्दिर का गुम्बद, जटाओं के जूड़े सा कलश। आत्मा जैसी मूरत-बन गया मन्दिर। जैसे छोटा बच्चा कबूतर, खरबूजा, गोभी के माध्यम से क ख ग पढ़ता है उसी तरह **मन्दिर और मूरत के माध्यम से**

इस शरीर रूपी मन्दिर और आत्मा रूपी मूरत को पढ़ डालो।

❖ ❖ ❖

क्या तुम भगवान राम की मूरत पर शराब, मांस गांजा, भांग, तम्बाकू चढ़ा सकते हो? यदि तुम मन्दिर के मूरत पर यह नहीं चढ़ा सकते तो आत्मा, जो साक्षात् परमेश्वर है, इस शरीर मन्दिर में, पर कैसे चढ़ा रहे हो?

क्या तुम मन्दिर में बैठकर किसी को गाली अथवा किसी के प्रति गन्दे विचार अथवा कोई घृणित कार्य कर सकते हो? जिसकी मूरत के समक्ष ऐसा करने से तुम घबड़ाते हो, वही तो साक्षात् तुम्हारे भीतर बैठा है उसके सामने यह सब कैसे कर रहे हो?

परमेश्वर ने आत्मा होकर तुम्हें साँस और धड़कन दी; जीवन का प्रत्येक क्षण दिया, उन्होंने आत्मा होकर कोई फीस ली? जब परमेश्वर आत्मा होकर निष्काम सेवा द्वारा तुम्हें साँस और धड़कन देते हैं तो उन साँसों और धड़कनों को निष्काम सेवा में लगा दो। ईश्वर द्वारा निष्काम भाव से बनाए इन हाथों को प्राणीमात्र की निष्काम सेवाओं को समर्पित करो। यह हाथ लूटने-खसोटने के लिये नहीं हैं।

❖ ❖ ❖

घट-घटवासी राम आज भी आत्मा होकर तुम्हारी जूठन को रक्त में बदल रहे हैं। राम आज भी हर शबरी के जूठे बेर खाते हैं। सम्पूर्ण जगत को आत्ममय जानो। जब आत्मा भेदभाव नहीं करता तो इस संकीर्णता से ऊपर उठो। **आत्मद्रोही धर्मात्मा नहीं कहलाता।**

❖ ❖ ❖

नदी और सन्त,
भेदभाव से दूर।
निर्बाध : अनन्त,
नदी और सन्त।।

❖ ❖ ❖

तुम कहते हो परमेश्वर सर्वव्यापी है, सर्वत्र है तो तुम्हीं बताओ कि वह

किसी सम्प्रदाय का कैसे हो गया? तुमने उस परमेश्वर को सम्प्रदायों की संकीर्ण डिब्बियों में कैसे बन्द कर लिया?

जो ऊँच-नीच, भेद-भाव और सम्प्रदायों की संकीर्णताओं से ऊपर न उठ सका उसने कभी धर्म को नहीं जाना। **आत्मा और प्रकृति का धर्म ही मूल धर्म है।** जब ईश्वर आत्मा होकर पेड़ों में, पशु-पक्षियों में, हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख और ईसाई सभी में व्याप्त है; आत्मा होकर उसने ऐसे किसी भी भेद-भाव को नहीं स्वीकारा तो इन संकीर्णताओं से ऊपर उठकर आत्मा की भांति ही स्वयं को अन्तर्ब्रह्माण्डीय स्वरूप दो।

✤ ✤ ✤

तुमने घर में गाय को जन्जीर से बांध रखा है। क्या गाय बंधी है? कल्पना करो खूँटा टूट गया और गाय जन्जीर लिये जंगल में भाग गई। एक शैतान लड़के ने जन्जीर निकाल ली और भाग गया। अब बताओ क्या गाय को जन्जीर खो जाने का दुख है? नहीं!

दुखी तो तुम हो कि दस रूपये की जन्जीर खो गई। तब बताओ उस जन्जीर से गाय बन्धी थी अथवा तुम? गाय बंध कर भी नहीं बंधी थी और तुम बिन बंधे भी बंधे हुए थे। भव बँधन काटो! राम से बँधना सीखो।

✤ ✤ ✤

अह्म के खूँटे पर स्वामित्व की गांठों से वासनाओं की रस्सियों द्वारा यह जीव बंधा हुआ है। **अहम् के खूंटे को नष्ट कर दो; स्वमित्व का त्याग करो, वासनाएँ स्वतः निष्क्रिय हो जायेंगी।**

✤ ✤ ✤

ईश्वर ने आत्मा होकर जन-जन की सेवा में सम्मान ढूँढ़ा है। यदि सम्मान चाहते हो तो आत्मा की ही भांति प्राणीमात्र की निष्काम सेवा करो। **इन्द्रियों को आत्मा का आभूषण जानों। इन्द्रियों का प्रयोग आत्मयज्ञार्थ करो।**

जो भोजन तुम ग्रहण करते हो, वही तो रक्त-मांस में बदल गर्भ में बालक का स्वरूप ग्रहण करता है। जैसी सन्तान चाहते हो, वैसा भोजन ग्रहण करो। जब बकरा और मुर्गी शराब की बोतल के साथ बेटा बनकर

लौटेगा तो तेरे घर का सर्वनाश कैसे नहीं होगा? तुमने अपने पितरों को भस्मी में बदल वनस्पतियों को प्रदान किया था वहीं भस्मी ही तो वनस्पति बन फलों में लौटी हैं। उन्हें वनस्पतियों से अपने घर लाओ। भोजन में उन्हीं वनस्पतियों को ग्रहण करो जिससे तुम्हारे पितृ तुम्हारे पुत्र बन लौट सकें। **शुद्ध और सात्विक भोजन लो।**

ईश्वर ने तुमको गाय, बैल जैसे दांत दिये हैं जो कि वनस्पतियों को ही काट सकते हैं। यदि ईश्वर की इच्छा माँस खिलाने की होती तो बिल्ली अथवा चीते जैसे दाँत देता! गाय बैल पशु होकर भी उसकी आज्ञा का अनुसरण करते हैं। फल-फूल ही खाते हैं। मनुष्य होकर ईश्वर की आज्ञा की अवहेलना मत करो।

पिता की मृत्यु हुई। घर में छूत वास कर गई। चिता की लकड़ियों पर उसके शव तुम जला आये। क्या मुर्गा और बकरी का शव तुम्हारे पिता से पवित्र है जो उसका शरीर रूपी मन्दिर में रख लिया?

प्राचीनकाल में जब तपस्वी ऋषि यज्ञ करते थे तो पिशाच यज्ञ में माँस और मदिरा फेंककर यज्ञ का विध्वंश करते थे। आज भी आत्मा हर शरीर में ऋषि होकर यज्ञ करता है और पिशाच एवं पतित व्यक्ति उस यज्ञ को विध्वंस करते हैं। माँस मदिरा का सेवन मत करो।

वेद ने कहा यदि यह शरीर तेरा मन्दिर न बना; जीव होकर तू इस मन्दिर का पुजारी न हुआ; आत्मारूपी ईश्वर को जाना नहीं . . .अरे! तो तू किसी मन्दिर न गया! कोई तीर्थ न किया! किसी ईश्वर को माना नहीं!

जो सातवें आसमान पर रहता है उसकी चिन्ता तुम क्यों करते हो? सारे ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म स्वरूप तुम स्वयं हो। सातों आसमान तुम्हीं में रहते हैं और सातवें आसमान में रहने वाला परमेश्वर आत्मा होकर तुम्हीं में वास करता

है- उससे भीतर जाकर मिलो।

✤ ✤ ✤

ईश्वर की लिखी किताब यह प्रकृति ही तो है जिसे वह आज भी आत्मा होकर अपनी कलम से लिख रहा है जिसका एक अक्षर तुम स्वयं हो। यदि ईश्वर के लिखे ग्रन्थ को पढ़ना चाहते हो तो स्वयं को पढ़ो। इस ग्रन्थ के हर अक्षर में सारे ग्रन्थ की कथा छिपी हुई है। हर अक्षर स्वयं में पूरा ग्रन्थ है-इसे पढ़ डालो, जो तुम स्वयं हो।

✤ ✤ ✤

सूखी गाय को सूखा चारा देते हो हरी गाय को हरा। तुम्हारे ही पुत्र तुम्हारे इस व्यवहार को संस्कारवत् ग्रहण करते हैं तो बुढ़ापे में तुम्हारे साथ सूखा व्यवहार करते हैं। **यदि चाहते हो कि तुम्हारी सन्तानें अन्त तक तुम्हें सम्मान दें तो सूखा और हरा नहीं, हरा ही हरा व्यवहार करो। सात्विक भोजन के साथ ही सात्विक विचार एवं पवित्र आचरण के संस्कार दो।**

✤ ✤ ✤

'हिरण्य' का अर्थ है सुनहरा; 'कशिपु' का अर्थ है बिस्तर! वासनाओं का सुनहरा बिस्तर ही प्रहलाद का पिता हिरण्य कशिपु है। 'प्र' अर्थ अमर! ह्लाद' का अर्थ है मस्ती। आत्मा की अमर मस्ती ही प्रहलाद है। तुम अपने पुत्र को सुनहरी वासनाओं का भ्रमात्मक बिस्तर दे रहे हो अथवा आत्म ज्ञान की अमर मस्ती। तुम पूछो स्वयं से हिरण्य कशिपु हो अथवा प्रहलाद।

✤ ✤ ✤

दस इन्द्रियों को रथने वाला अर्थात् लगाम लगाने वाला 'दशरथ' और दस इन्द्रियों को दसमुख बनाने वाला दशानन रावण है। घट-घट वासी आत्मा राम हैं। **दशरथ बनो! राम तुम्हारे शरीर आंगन में खेल रहा है। भीतर झांको!!**

दस इन्द्रियों के अर्जन (संकलन) से अर्जित यह बुद्धि ही तो अर्जन है। यज्ञोपवीत गाण्डीव है। शरीर रथ है। अमर आत्मा कृष्ण सारथि हैं इस शरीर रथ के मायायों का महासमर ही महाभारत है।

यज्ञोपवीत के गाण्डीव पर वाह्य चिन्तन की भ्रान्तियों को सत्य, ज्ञान, भक्ति विरक्ति और ब्रह्मचर्य के पैने वाणों द्वारा नष्ट करते हुए; दस इंद्रियों रूपी दस फन वाले कालिया नाग को नथ; अन्तर्मुखी हो बुद्धि और आत्मा के द्वैत को योगमार्ग से अद्वैत करना ही मात्र लक्ष्य है इस मानव जन्म का। **इस महासमर को कृष्ण के अर्जुन सा लड़ो।**

सृष्टा (Creator) कहाँ हैं जहाँ सृष्टि (Creation) है।

तुम्हारी माँ सृष्टा (Creator) है अथवा सृष्टि (Created) ?

परन्तु तुम्हारी माँ ने तुम्हें उत्पन्न किया क्या सृष्टि (Created) सृजन (Creation) कर सकती है? वह तो एक अंगुली भी नहीं बना सकती। तब माँ के गर्भ में तुमको किसने सृजन (Creation) द्वारा बालक रूप प्रदान किया? उसे हम क्या कहेंगे सृजक (Creator) परमेश्वर**!!**

इस प्रकार जो सातवें आसमान में रहता है वही सृजक (Creator) घट-घटवासी होकर सम्पूर्ण सचराचर को सृजन द्वारा अहर्निश प्रकट कर रहा है। नुक्ते के महत्व को जानो-खुदा को जुदा न करो।

꧁ ꧁ ꧁

रोगी अच्छे से अच्छे डाक्टर को ढूँढता है क्या तुमने उस डाक्टर के विषय में सोचा जो भस्मी के ढेर को बालक बना देता है। वही तो बालक को देवत्व देगा। मात्र डाक्टर को पहचानो। **आत्मा होकर वह डाक्टर तुम्हारे भीतर बैठा है। भीतर चलो।**

꧁ ꧁ ꧁

कर्म के त्याग से संस्कार नष्ट नहीं होते जब तक उन्हें ज्ञान की अग्नि से भस्मासात् न किया जाय। बुराइयों को केवल कर्म ही मत त्यागो, उसे चिन्तन से भी मिटा दो-यह ज्ञान द्वारा ही सम्भव है। **ज्ञानियों का सत्संग करो।**

꧁ ꧁ ꧁

कर्म के तीन अंग हैं-लक्ष्य (Aim) चिन्तन (Planning) और क्रिया (Action)। लक्ष्य को धारण करना कर्मफल नहीं है। किसी भी कर्म को करने

में उत्पन्न होने वाली मनस्थितियाँ यथा राग-द्वेष, घृणा, क्रोध, लिप्सा, अनाधिकार चेष्टाएँ, झूठ, चोरी आदि कर्मफल हैं। किसी भी कर्म को इन मनस्थितियों के साथ जोड़ नष्ट मत करो। आत्म यज्ञार्थ कर्मयोगी बनो! कर्म को सूक्ष्मता से जानो-सत्संग करो।

❈ ❈ ❈

चिन्तन कर्म है चिन्ता कर्मफल। चिन्तन अमृत है। चिन्ता विष है। चिन्ता से जुड़ा कर्म महापाप है, चिन्ता से रहित कर्म ईश्वर है।

❈ ❈ ❈

चिन्ता की उत्पत्ति अह्म से है- मैं करता हूँ। अह्म रावण है। चिन्तन की उत्पत्ति आत्मा से है; आत्मा राम है-राम से प्यार करो।

❈ ❈ ❈

तुम्हारे घर कोई व्यक्ति आये तो तुम उसका स्वागत करो, खूब सेवा करो। तभी तो वह दुबारा तुम्हारे घर आएगा। तुम्हारे घर कोई व्यक्ति आये और तुम उसकी तरफ देखो भी नहीं तो क्या वह दुबारा तुम्हारे घर आयेगा?

सारा दिन तुमने चिन्ता देवी की स्तुति की। चिन्ता देवी ने कहा कि यह मेरा प्यारा भक्त है, मेरी बहुत सेवा करता है। अब वह तुम्हारा घर क्यों छोड़ेगी? यदि तुम चिन्ताओं का निवारण चाहते हो तो ईश्वर भक्त बनो, चिन्ता देवी के नहीं।

चिन्ता तथा सुख-दुख मन की उपज है। मना तो है न मानों तो नहीं। लिप्साएँ ही इसका भोजन हैं।

❈ ❈ ❈

मकान बनाने में कोई दोष नहीं, मकान बन जाना बहुत बड़ा पाप है। अपना मकान स्वयं मत बनो।

❈ ❈ ❈

दूसरा यज्ञ-उन्हीं फलों को एक दम्पत्ति ने भोजन स्वरूप ग्रहण किया। जिसने उन फलों को रक्त-मांस में बदल बालक का स्वरूप दिया? उस घट-घटवासी आत्मा को देह-देह में खोजो। जीवन के इस तत्व को पाने के

लिए प्राणी मात्र से प्यार करो। निष्काम सेवाओं को सर्वोपरि स्थान दो।

तीसरा यज्ञ-आत्म चिन्तन करो। उस आत्मा को जो ईश्वर होकर तुम्हें सांस और धड़कन देता है उसे पहचानो। आत्म ज्ञान को धारण करो। शरीर सामग्री को आत्म ज्वालाओं में यज्ञ कर ब्रह्मत्व को धारण करो-खिलौने से खिलाड़ी बनो।

यह तीन सूत्रों का यज्ञोपवीत धनुषाकार क्यों पहनाते हैं? इसलिए कि तुम मायाओं के महासमर के महारथी हो। असत्य, अज्ञान, व्यभिचार तथा आत्मद्रोही वृत्तियों से योद्धा की भाँति यज्ञोपवीत के गाण्डीव पर त्याग, वैराग्य, प्रेम, सत्य, तप, साधना और निष्काम सेवा के अस्त्रों से युद्ध करो। जीतकर स्वर्गारोहण करो।

꠸ ꠸ ꠸

दिन कहाँ है? जहाँ सूर्य है। सूर्य कहाँ है? वह तो आत्मा है क्योंकि आत्मा रूपी सूर्य के हटते ही एक सहस्त्र सूर्य क्यों न जगमगाएँ। मुर्दे की आँख को रोशनी नहीं मिलती। इसलिए मेरा सूर्य तो मेरी आत्मा है जिसके प्रकाश से बाहर वाला सूर्य शीशे की भांति चमकता है। मेरा दिन मेरे भीतर है, बाहर अंधेरी रात है। यदि रात न होती तो आत्मा रूपी लालटेन के बिना भी पत्नी-पुत्र दिखते? फिर आत्मा रूपी लालटेन की जरूरत क्यों होती? परन्तु इस लालटेन के छिनते ही कुछ नहीं दिखायी देता। जो दिन में सोता है वह पापी होता है, जो रात में जागता है उसे निशाचर कहते हैं। दिन में जागो अर्थात् भीतर जागो, रात में सोओ अर्थात् भौतिकताओं से विरक्त हो।

꠸ ꠸ ꠸

मैं कौन हूँ? शरीर अथवा आत्मा? न शरीर न आत्मा। मैं तो जीव (Consciousness) हूँ। विचारों की सीमाओं के बाहर मेरा अस्तित्व नहीं। यही जीव (Consciousness) जब प्रकृति से अद्वैत करे तो ऋषि है जब आत्मा से जुड़ जाये तो ईश्वर है और जब इन्द्रियों के द्वार भटकता फिरे तो प्रेत है।

꠸ ꠸ ꠸

हलवाई ने लड्डू बनाए। बहुत से बर्तनों का प्रयोग किया। एक बर्तन में

सीरा बनाया। दूसरे में बेसन घोला और तीसरे में घी गर्म किया। इस प्रकार बहुत से बर्तनों का प्रयोग कर हलवाई ने लड्डू बनाए। बताओ किस बर्तन ने लड्डू बनाए? उत्तर एक ही आयेगा कि बर्तनों ने लड्डू नहीं बनाए। लड्डू बनाने वाला तो हलवाई है।

ठीक इसी प्रकार वह आत्मा हलवाई ही तो था जो पेड़ रूपी बर्तनों में यज्ञ कर तुम्हें फलों में लाया। वह आत्मा हलवाई ही तो था जो देह रूपी बर्तनों में तुम्हें यज्ञ कर बालक का स्वरूप प्रदान किया। वह आत्मा हलवाई ही तो है जो आज भी इस शरीर रूपी बर्तन में जीवन के स्वर्ण क्षण रूपी लड्डुओं को उत्पन्न कर रहा है। बोलो! बर्तनों का रिश्ता मानोगे या हलवाई का?

थाल में रक्खे लड्डुओं को जब तुमने भोगा अर्थात् खाया तो थाल के लड्डू समाप्त हो गए यदि तुम कहो कि तुम इस जीवन को भोग रहे हो तो तुम क्यों समाप्त हो गए? सोचो! तुम भोग रहे हो अथवा भोगे जा रहे हो।

❀ ❀ ❀

काम की वासना जगी। कामुकता ने शुभ और अशुभ का ज्ञान मिटा दिया। वासनाओं की पूर्ति में भटकते फिरे मैंने इसको भोगा! मैंने उसको भोगा।

मैं पूछता हूं कि तुमने किसको भोगा? यदि नपुंसक होते तो क्या किसी स्त्री को भोग सकते थे? अपनी इन्द्रियों को ही तो भोगा? वह इन्द्रियाँ चली किसके तेज से? आत्मा के ही। अपनी ही आत्मा और शरीर को भोगने वाला यह जीव (Consciousness) अपनी अन्धता के कारण भटकता फिरता है जब कि भोगता वह स्वयं को ही है।

❀ ❀ ❀

एक इन्द्रिय का दमन करने वाला यदि ब्रह्मचारी है तो सारे हिजड़े ही ब्रह्मचारी कहलावेंगे। ब्रह्मचारी का अर्थ-ब्रह्म के मार्ग का आचरण करने वाला; दसों इन्द्रियों की वासनाओं का दमन करने वाला, इन्द्रियों को आत्मा का आभूषण जान, इनका प्रयोग आत्मयज्ञार्थ करने वाला।

मयूरासन, शीर्षासन, कुक्कुटासन यदि योग है तो सर्कस के जोकर को

क्या कहेंगे? योगेश्वर**!** योग का अर्थ है जीव (Consciousness) का आत्मा (Creator) से मिलन। उपासक का उपास्य से मिल उपास्य हो जाना भक्त का भगवान होना; लोटे के जल का सागर में व्याप्त हो सागर हो जाना।

व्यक्ति परिवर्तन से सुधारवाद को जन्म नहीं दिया जा सकता है, हृदय परिवर्तन की बात करो। दशानन से दशरथ बनो। सृजक की सामर्थ्य को धारण करो तो स्वयं को ईश्वर घोषित करो। दासभाव से पुत्रभाव में आओ और पुत्रभाव से सर्वव्यापी हो जाओ।

स्वर्ग और नर्क, दिन और रात की ही बात है। स्व+अर्क=स्वर्ग। स्व माने आत्मा अर्क माने सूर्य। जो आत्मा रूपी सूर्य में स्थिति हुआ। न+अर्क=नर्क। जो आत्मा रूपी सूर्य में स्थित नहीं हुआ, भौतिक जगत में भटका उसे नर्क हुआ। बाहर भटकने वाला नर्कगामी है और आत्मा में स्थित होने वाला स्वर्ग का राही है। बाहर का मार्ग धूम्रमार्ग तथा बाहर का यान है पितृयान है। आत्मा में स्थित होने वाला मार्ग शुक्ल मार्ग है-शुक्ल का अर्थ है उज्जवल। उज्जवलता का उद्‌गम है आत्मा रूपी सूर्य। आत्मा का ही दूसरा नाम देव। आत्मयान ही देवयान है। आत्मा में स्थित हो।

ईश्वर ने तुम्हें उत्पन्न किया यदि इसलिए तुम ईश्वर को मानते हो तो मत मानो, यह उसका कर्त्तत्य है। ईश्वर तुम्हें सांस और धड़कन देते हैं, वे नहीं देंगे तो तुम मर जाओगे, इस भय से यदि तुम ईश्वर को मानते हो तो मत मानो। ईश्वर ही तुम्हें दुबारा मनुष्य योनि देने सक्षम है, इस लालच से यदि तुम ईश्वर को मानते हो तो मत मानो। हाँ**! यदि तुम ईश्वर की राह चल ईश्वर बनना चाहते हो तो उसे मानो पहचानों, ढूंढों और उससे लिपटकर ईश्वर बन जाओ।**

एक पेड़ पर दो फल लगे। एक वहीं पर गिर पड़ा, फिर मिट्टी हो गया दूसरा एक स्त्री ने खाया और उसके गर्भ में बालक हो गया। एक ही प्रकार के फल की दो गतियां हो गईं। इसी प्रकार तुम्हारी भी दो गतियां हैं या तो पेड़ पर लगे फल की भांति इस जीवन को भस्मी में बदल दो- मिट्टी हो जाय अथवा उस अमर तत्व को पाकर उसके ज्ञान को धारण करके उन्हीं क्षमताओं को प्राप्त होकर तुम उत्थान को प्राप्त हो।

✤ ✤ ✤

एक धूममार्ग दूसरा शुक्ल मार्ग। एक पितृयान दूसरा देवयान। एक अन्धकार में डूबता है-धुएँ सा धुंधला हो जाता है और दूसरा शुक्ल ज्योतियों को धारण करता नित्य ज्योति हो जाता है।

देवयान के पाँच महावाक्य पंचज्योति स्तम्भ हैं-तत्वमसि, तेजोऽसि, एकोबह्मद्वितीयोनास्ति, अहम् ब्रह्मस्मि तथा सोऽहं।

✤ ✤ ✤

'तत्वमसि' तुम्हारी धारणा है-धारणा का पुष्ट साँचा बनाओ।

'तेजोऽसि' ध्यान है-ध्यान की जगमग ज्योति जलाओ।

'एकोब्रह्म द्वितीयोनास्ति' तुम्हारी समाधि है। समाधि का अर्थ है सर्वत्र उस ईश्वर को देखना; सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते आत्मा के ही सन्मुख रहना। एक ब्रह्म को सम्पूर्ण सचराचर में धारण करना ही समाधि है सम्पूर्ण जगती को वासुदेवमय जानो।

✤ ✤ ✤

'अहम् ब्रह्मास्मि' वासुदेवमय बनने की प्रक्रिया है। आत्मवत् अचारण, आत्मवत् प्रेम, आत्मयज्ञार्थ चेष्टाएँ, निरन्तर आत्म साधना तथा सम्पूर्ण सचराचर से आत्मीयता अहम्ब्रह्मास्मि का मार्ग है। आत्मा में ही सारी क्रियाओं का-सारे क्षणों का यज्ञ अहम्बृह्मास्मि है।

✤ ✤ ✤

यज्ञ की पूर्णता है योग-इसे कहते हैं 'सोऽहं'। जीव (Consciousnes) और आत्मा (Creator) का मिलन! जब जीव

(Consciousnes) का आत्मा (Creator) से संयोग होगा तो क्या बनेगा? सृजक (Creator)। सृजन के रहस्यों को पाकर सृजित सृजक हो गया-खिलौना खिलाड़ी बना, उपासक उपास्य हो गया। धारणा, ध्यान, समाधि, यज्ञ और योग के शुक्ल मार्ग का अनुसरण करो :

यज्ञोपवीत के तीनों सूत्रों को पहचानों, यह तीन यज्ञों के प्रतीक हैं।

पहला यज्ञ- कैसे तुम भस्मी से फलों में आए? उस चेतन तत्व को जो भस्मियों को फलों में लौटा रहा है पहचानो। प्रकृति के इस प्रथम यज्ञ के अनुयायी बनो! जीवन की खोज प्रकृति की इस पुस्तक में इन वृक्षों से आरम्भ करो। नित्य नये पेड़ लगाओ। जैसे पुजारी मन्दिर और मूरत की सेवा करता है उसी प्रकार तुम इन पेड़-पौधों की सेवा करो।

दुःख करने और रोने से यदि समस्याओं का समाधान हो सके तो हम भजनानन्दी टोले जैसे रोनानन्दी टोले बना दें, क्या समस्या का समाधान हो जायेगा? समाधान तो चिन्तन द्वारा ही सम्भव है समाधान ढूंढ़ो-दुःख और आँसू नहीं। दुःख और चिन्ता समाधान के विपरीत हैं।

इन्सान भूख से नहीं मरता; इन लिप्साओं की भूख को मिटाने की प्रक्रिया में मर जाता है। भूख इन्द्रियों की, लिप्साओं की मिटती नहीं, बढ़ती जाती है। भूख मिटाने वाला स्वयं मिट जाता है। इन्द्रियों की लिप्साओं की भूख को मिटाने के बजाय आज तू लिप्साएँ ही मिटा दे जीवन में आनन्द की धारा अहर्निश होगी।

एक व्यक्ति घर से निकला, झोला है उसके हाथ में। एक खेत के पास से गुजरता है जहाँ पहरेदार नहीं हैं। फल तोड़कर झोले में भर लेता है। आगे बढ़ता है और दूसरे खेत में आता है, वहाँ पर एक बालक पहरे पर बैठा है। वह फल तोड़ता है, बालक मना करता है तो उसको डांट देता है। आगे बढ़ता है और अगले खेत में आता है जहाँ लोग आलू खोद रहे हैं। उनके साथ बैठकर आलू खोदता है और बदले में कुछ आलू पा जाता है। आगे

बढ़ता है और धनियाँ व पुदीना के खेतों में से मिन्नत करके कुछ माँग लेता है। सारा सामान बटोर कर खुशी-खुशी घर चल देता है, सोचता है कि अब तो कई दिन बैठकर खाऊँगा। घर आकर झोला उल्टता है, झोला खाली है। हुआ क्या? झोले का पेंदा फटा था, वह ऊपर से माल भर रहा था और राह में बिखर रहा था।

ठीक यही स्थिति तुम्हारी भी है। कहीं चोरी करते हो, कहीं डाका डालते हो, कहीं सकाम सेवा में फंसते हो, कहीं भीख माँगते हो और चिन्ता की लकड़ियों पर झोला फिर खाली है। उस झोले को भरनेवालों! पहले झोले का पेंदा तो सी लो स्वयं को पहचानो-आत्मसंगी बनो!

धनुष पर रखकर बाण, डोरी को कान तक खींचकर मैं हवा में छोड़ दूं। अचानक उस बाण में प्राण आ जाये तो क्या वह सोचेगा कि किसी ने उसे फेंका है हवा में? वह तो कहेगा कि मैं उड़ा जा रहा हूं। यही स्थिति है तुम्हारी हर साँस की भीख माँगने वाले, अन्न का दाना-दाना भिक्षा में प्राप्त करने वाले; अज्ञान के कारण मान बैठते हैं कि वे विधाता हैं। विधाता को पहचानो-आत्म चिन्तन करो!

पैदा हुये तो बारह जन्मों की शूद्रता का प्रतीक बरहा मना घर में छूत वास की नाल काटने आयी हरिजन दायी। मरे तो इस एक जन्म की शूद्रता का प्रतीक एक दिन और जुड़ा जन्म काल के बरहा में। तेरही हो गई। जन्म काल धूद्र अन्त में फिर महाशूद्र हो गया क्यों? चौरासी लाख योनियों की किताब को पढ़ाकर यह प्रकृति तुम्हें मनुष्य योनि में लायी है। ईश्वर आत्मा होकर परीक्षक है देह तुम्हारी परीक्षा स्थल है तथा जीव होकर तुम परीक्षार्थी हो। यदि फेल हो जाओगे तो फिर चौरासी लाख योनियों के चौरासी लाख अध्याय पढ़ने जाना होगा, पास होंगे तो अमरत्व मिलेगा; यदि कम्पार्टमेंट आया तो कुछ योनियों के बाद फिर मनुष्य योनि पाकर इम्तहान के लिए आओगे। इम्तहान की इस घड़ी को भटकाव में नष्ट न करो-सावधान होकर प्रश्नों के उत्तर दो।

❀ ❀ ❀

तेज हवा के साथ धूल उड़ी थी। बरसात की बौछारों से फिर धरती पर आ गिरी। फिर वह धूल फल बन गई। इन फलों ने बालक का स्वरूप पाया। वह धूल बालक हो गई। यदि वह आत्मा के साथ अद्वैत कर गई तो ईश्वर के चरणों का स्पर्श पा ईश्वर हो गई अन्यथा तेज वर्षा के साथ उड़ती हुई धूल को पुनः धरती पर आना होगा। यदि तुम स्वयं को ईश्वर भक्त कहते हो तो इस धूल को, जो तन है तुम्हारा, भगवान बना दो-ईश्वर की राह चलो ईश्वर बनो!

❀ ❀ ❀

तीन भाव हैं-देहभाव, जीवभाव और आत्मभाव।

देहभाव से हे ईश्वर; मैं तुम्हारा दासानुदास हूं। जब तक मैं शरीर की सीमाओं में हूँ, इस जगत को देह की सीमाओं के द्वारा ही धारण करता हूँ, अपने-पराये, ऊच-नीच के भेद-भाव से जीता हूँ, तो देहभाव में रहता हूँ उस समय मेरी स्थिति दासानुदास की है।

❀ ❀ ❀

जब जीवमात्र में भेद न करूँ, प्राणी मात्र से अतीन्द्रिय प्रेम हो मेरा, तो मैं जीव-भाव में आता हूँ और तब मैं ईश्वर का पुत्र हूँ-'ईश्वर अंश जीव अविनाशी'।

जब पाँच महावाक्यों के मार्ग पर चलता 'सोऽहं' को प्राप्त होता हूँ तो मैं ईश्वर हूँ।

तुम जिस मनःस्थिति में हो उसके ही सत्य का आचरण करो अन्यथा महापापी होंगे। जब तक पत्नी, पुत्र, मकान और दुकान दिखते हैं जब तक दासानुदास बनो, जब प्राणी मात्र में समभाव दिखे तो पुत्र हो जाओ और जब सृजन के सारे रहस्यों को पाकर कोई तुम्हारे साथ बुरा करे तो तुम बदले की भावना से बुरा मत करो। क्या तुमने कभी किसी आदमी को पागल कुत्ते को काटते देखा है?

चोर ने चोरी की, डाकू ने डाका डाला, तपस्वी ने तप किया; ईश्वर ने घट-घट वासी आत्मा होकर सभी को समान भाव से सांसें और धड़कनें

प्रदान की। आत्मा होकर आत्मा का धर्म ही निभाया। तुम भी बदले की भावना से प्रेरित होकर आचरण मत करो। **जो तुम्हारा आत्मवत् धर्म है उसी को धारण करो।**

❖ ❖ ❖

धृणा का बन्धन प्रेम और वासना से अधिक तगड़ा और विनाशकारी है। यदि किसी ने तुम्हारे साथ बुराई की है तो उसे क्षमा कर दो। यदि वह सुधर नहीं सकता है तो उसे अपने चिन्तन से मिटा दो, इससे बड़ी दूसरी सजा नहीं हो सकती है। तुमने उसकी हत्या भी कर दी और दोषी भी नहीं हुए।

आनन्द कहाँ है? जहाँ आत्मा सर्वानन्द है। मिठास वहीं है जहाँ मधुर गोपाल आत्मा है। अपने ही अन्तर के आनन्द को हर व्यक्ति भोग रहा है और इन्द्रियों के इन्द्र-जाल में फंसा स्वयं से अभिशप्त, स्वयं से अन्धा आँधी में पड़े टूटे पीपल के पत्ते सा खड़खड़ाता है। निज स्वरूप को पहचानों-सत्संग करो।

मन संशय रहित हुआ किसका-आत्मा को संशय हुआ कब? बुद्धि के संशयों का निवारण चाहने वालों! इसे मन के संग से हटा आत्मसंगी बना दो, संशय रहेगा न बाकी। **आत्म चिन्तन करो! सत्संग करो!!**

❖ ❖ ❖

बाजार में सामान खरीदने जाते हो तो एक ही चीज को कई दुकानों पर देखते हो, तुम सामान खरीदते हो अथवा दुकानदार? आध्यात्म के बाजार में अमृत को बटोरो, ठेकेदारों को नहीं-सौदा खरीदो, सौदागर नहीं।

गुरुता की गरुता का भार ढोये कौन?
जन-जन की चरण रज को,
हम भाल-तिलक जानते हैं।

सन्यासी किसी देश-प्रदेश अथवा जाति-धर्म का नहीं होता, सन्यासी आत्मा और प्रकृति की ही भाँति प्राणी मात्र का होता है। जो जाति-पांति, देश-काल, अपने-पराये के भेदभाव से ऊपर न उठ सका उसे तुम ढोंगी जानों। रावण भी जब सीता जी का अपहरण करने गया था तो उसने एक ढोंगी सन्यासी का ही वेष धारण किया था। धर्मात्मा वही है जो आत्मा को

जाने, आत्मा के धर्म को पहचाने तथा मनसा-वाचा-कर्मणा आत्मवत् आचरण करे।

❀ ❀ ❀

पुष्प और सन्तः
निष्काम सेवा-मन्त्रबीज!
स्वामित्वः दुखद अन्त!
पुष्प और सन्त!

❀ ❀ ❀

जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी सूखी जामुन की गुठली ने पेड़ से कहा :-

"मेरे प्यारे पेड़ क्या तुम मेरी कुछ मदद नहीं करोगे?" पेड़ ने उत्तर दिया, हाँ! क्या चाहती हो। "तुम्हारे पास ढेरों पत्तियाँ हैं असंख्यों टहनियाँ हैं। मेरे तो कुछ भी नहीं! कुछ टहनियाँ और पत्तियाँ मुझको दे दो!" गुठली ने विनती की। "मैं दे दूंगा। परन्तु तुम रख न पाओगी। टहनियाँ सूख जायेंगी, पत्तियाँ मुरझा जायेंगी!" "फिर मैं क्या करूँ?" गुठली ने पूछा। "सुन अपनी हस्ती को मिट्टी में मिला दें।"

गुठली मिट्टी में मिल गई। फिर उसके पास पत्तियाँ भी थीं और टहनियाँ भी।

मिला दे स्वयं को सत्संग की मिट्टी में। हरि जल से सिंचने दे स्वयं को। आचरण की पवित्र खाद लगा। वासुदेव रूपी सूर्य प्रकाशित है। अमरत्व के अंकुर फोड़, फिर तेरे पास ईश्वरीय आनन्द की पत्तियाँ हैं तपस्या की शाखायें और मोक्ष के पत्ते हैं।

दस घर का कुत्ता, हर घर मार खाता है और भूखा भटकता है। एक घर का कुत्ता मालिक को भी नौकर बनाता है। एक आत्मा के द्वार बैठ।

श्री सनातन मित्र मण्डल निष्काम सेवार्थ, प्राणीमात्र के उत्थान, ज्ञान, प्रेम, पवित्र, सुखद एवं ज्योतिर्मय भविष्य हेतु, पूर्व की भांति ही प्राणीमात्र के श्री चरणों में यह अमर पुष्पाञ्जली 'सीपी के मोती' समर्पित करता है!

श्री स्वामी सनातन श्री

गुरूरेवपरंब्रह्म गुरूरेव परागतिः।
गुरूरेव पराविद्या गुरूदेव परायणम्।।

-मित्र सनातन

सीमिति साधन के अतिरिक्त बस नारायण ही है। उपेक्षा है, वंचक भाव है, घुटन है, इसके बाद भी जीवन को ईश्वरमय बनाने की इस प्रभु की बगिया की, रक्षा, सेवा का संकल्प है।

सनातन संस्कृति के मौलिक स्वरूप को यथा सामर्थ्य फैलाने की चाहत है।

-सनातन प्रेम

-:प्राप्ति स्थान:-

❖ श्री सनातन आश्रम
गौरा बाग, कुर्सी रोड,
गुडम्बा थाने के सामने, लखनऊ-20
मोबाइल : 8707651736,

❖ शिव शान्ति सदन
179, सराय हसनगंज,
लखनऊ-226020
मो0: 9838077297, 7080916201